सम्पादकीय

उठो, उठाओ, उत्कृष्ट बनो

Rise, Raise, Race to lead

उतार चढ़ाव जीवंतता की सतत प्रक्रिया है। अलग अलग काल खंड में अलग अलग भूखंडों पर सभ्यताएं विकसित हुईं। सृष्टि, समाज और व्यक्ति के बारे में उनकी अपनी दार्शनिक दृष्टि थी। भारत की सभ्यता में अभ्युदय (भौतिक प्रगति) और निःश्रेयस (आध्यात्मिक सिद्धि) दोनों को महत्त्व दिया गया। अभ्युदय से विविध क्षेत्रों में नवाचार - सृजनाचार के प्रयास हुए। मानव मूल्यों का रक्षण, प्रकृति सामंजस्य, और सामाजिक सहिष्णुता भारत की विशेषताएँ रहीं। कालांतर में सत्ता की महत्वाकांक्षा से राज्यों में बिखराव बढ़ा, आक्रांताओं ने रौंदा, भाषा और संस्कृति का ह्रास हुआ। जन सामान्य असहाय अनुभव करने लगा। निराश समाज को 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में स्वामी विवेकानंद ने जन जागरण का उद्घोष किया -

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"

अर्थात – उठो, जागो, रुको न जब तक लक्ष्य न मिले।

पिछले लगभग एक हजार वर्ष में भाषा, संस्कृति, ज्ञान–विज्ञान का उत्तरोत्तर तिरोभाव हुआ, जन सामान्य का आत्म विश्वास क्षीण हुआ। स्वाधीन भारत में पिछले सात दशकों में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, रणनीतिक विषमताओं से जूझते हुए विकास के प्रयास हुए। आमूलचूर वैचारिक परिवर्तन नहीं हो सका।

वर्ष 2020 महा आपदा वर्ष बन आया। जनवरी से कोविड महामारी से हर प्रांत में अमीर–गरीब, बाल–वयस्क–बुजुर्ग कोरोना वाइरस से त्रस्त होने लगे। आरम्भ में टेस्टिंग, ट्रेकिंग, ट्रीटमेंट के बहुत कम साधन थे। युवा शक्ति ने अल्पकाल में उपकरणों का विनिर्माण कर आयात को निर्यात में बदल दिया। केन्द्र सरकार-राज्य–स्वास्थ्य सेवाकेन्द्र–जन सेवाकेन्द्र-उद्योग जगत का सामूहिक प्रयास था। दूसरी आपदा, कई राज्यों में अतिवृष्टि से बाढ़ के कारण नदी किनारे बसे गांवों को भारी नुकसान हुआ, शहरों की सड़कें नाले बन गए। तीसरी आपदा, पड़ोसी देशों से नापाक कोशिशें होती रहीं। आतंकवाद को मिटाने और संप्रभुता की रक्षा प्राथमिक बनी। चौथी आपदा, जान बचाने लिए किए गए लॉकडाउन से अर्थव्यवस्था भी डगमगाने लगी।

लॉकडाउन-अनलॉक 1, 2, 3, 4 होते रहे। लेकिन जीवन रक्षण और जीवन पोषण की आवश्यक सेवाओं को भी बनाए रखा। जन सहयोगात्मक विकास कार्यों को बढ़ाने पर बल दिया गया। कोविद आपदा ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया। कौन, किसको, कैसे मदद करेगा ? अनिश्चितता बढ़ी। घनेरी आपदाओं के बीच स्मरण होता है -

"उद्धरेत् आत्मना आत्मानं न आत्मानम् अवसादयेत्
आत्मा एव हि आत्मनः बन्धुः आत्मा एव रिपुः आत्मनः।।" (गीता 6.5)

अर्थात् – अपने द्वारा अपना उद्धार करे, अपना पतन न करे, क्योंकि आप ही अपना मित्र है और आप ही अपना शत्रु हैं।

मई 2020 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने "आत्मनिर्भर भारत" बनाने का उद्घोष किया। इस हेतु जन सामान्य में आत्म विश्वास जगाना है। भारतीय ग्रन्थों में मनुष्य की शक्तियों का बोध कराया गया है।

"शुक्रोऽसि भाजोऽसि स्वरसि ज्योतिरसि आप्नुहि श्रेयोसमति समं क्राम।" (अथर्वेद)

अर्थात् – हे मनुष्य तू शुद्ध है, तेजस्वी है, आनंदमय है, ज्योतिर्मय है। तू आत्म विश्वास के साथ (अपनों से) श्रेष्ठों तक बढ़, समान लोगों से आगे बढ़।

भावानुवाद पद्यपंक्तियों में -

"तुम हो दिव्य शक्ति के स्वामी, बनो अग्रणी नहीं अनुगामी।
अपने ही अनुभव के बल पर, नए सृजन-आधार बनाओ।।"

भारत के इंजीनियरों ने आईटी के क्षेत्र में विश्व प्रसिद्धि पायी, लेकिन देश में आईटी प्रॉडक्ट नहीं बन पा रहे थे। इसी प्रकार मेडिकल उपकरण उद्योग, रक्षा उपकरण उद्योग, इलेक्ट्रोनिक उद्योग आदि कई उद्योग बढ़ नहीं पा रहे थे। आयात पर ढील थी। एक बात उभर कर आई कि कुशल जनशक्ति के साथ अनुकूल परिवेश भी आवश्यक है। अर्थ केन्द्रित व्यवस्था में सम्पन्न ग्राहक के अनुकूल उत्पाद और सेवाओं के विनिर्माण पर बल दिया जाता रहा। अर्थशास्त्री प्रो. सी के प्रह्लाद ने MNCs का आह्वान किया "The Fortune at the Bottom of Pyramid", कि वे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को ऊपर उठाएँ और अपना बाजार बढ़ाएं। भारत में 65% आबादी गाँवों में रहती है। लगभग 20% लोग गरीबी रेखा से नीचे रह रहे हैं। नौकरी के लिए गाँव से शहरों की तरफ पलायन बढ़ा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मानव केन्द्रित विकास का मंत्र दिया। अंत्योदय की परिकल्पना के आधार पर कई परियोजनाएं शुरू की गईं। हर स्तर पर, हर क्षेत्र में, हर उत्साही युवा को नवाचार में योगदान करने का आह्वान किया। समावेशी नवाचार (Inclusive Innovation) पर बल दिया। गरीब खुशहाल हो, उद्यमी बने, और युवा प्रतिभा को नवाचार परिवेश (इन्नोवेशन इकोसिस्टम) मिले।

राष्ट्रीय नेतृत्व ने अनुकूल परिवेश बनाने की दिशा में कई कदम उठाए। विदेशी आयात को कम करने, विदेशी एप्पों पर प्रतिबंध लगाने, दवा निर्माण में प्रयुक्त बेसिक कच्चे माल का आयात कम करने, रक्षा क्षेत्र में कई उपकरणों के आयात पर रोक लगाने जैसे कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लेकर और देश की युवा शक्ति को पूंजीगत सुविधा देकर बाजार खोल दिए। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। फलस्वरूप, बहुजन हिताय नवाचार और सृजनाचार की पहल शुरू हुई, तेजी से अच्छे नतीजे दिखने लगे, जन–आत्मविश्वास दृढ़तर होने लगा है, नए समाधान, नए उत्पाद, नवीन सेवाएं कम लागत, अधिक परिशुद्धता के साथ और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुकूल बनने प्रारम्भ हो रहे हैं।

नई शिक्षा नीति "आत्मनिर्भर भारत" की संकल्पना का पोषण करती है। रचनात्मक सोच की कुशल जन शक्ति का बृहद् आधार बाल पोषण एवं बाल शिक्षा है। नई शिक्षा नीति में कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के प्रयोग से शिक्षण, परीक्षण, नववाचार, ऑनलाइन / ऑफलाइन लेक्चर, वर्चुअल लेब, बालोपयोगी गेमिंग सॉफ्टवेयर, मूल्यांकन आदि क्षेत्रों में विकास किए जाने की आवश्यकता है। चुनौती है समग्र दृष्टि से सोचने, विशेषज्ञों से तालमेल बैठाने की।

नई शिक्षा नीति में "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल" की पुष्टि की गयी है। अन्य भाषा ज्ञान से लौकिक से वैश्विक बनाने में मदद मिल सकती है। कूप मंडूक दृष्टि की अपेक्षा विहंगम दृष्टि श्रेयस्कर है। संस्कृत भारतीय संस्कृति का द्योतक है। संस्कृत के बहुतेरे शब्द सभी भारतीय भाषाओं में कमोवेश प्रयुक्त होते हैं, उनकी वर्णमाला में समान क्रम है, संस्कृत वाङ्मय के कई कथानक कुछ रूपांतर से देश के सभी प्रान्तों, और कुछ विदेशों में भी प्रचलित हैं। इसलिए स्कूली स्तर पर संस्कृत का परिचय कराया जाए। उच्चतर तकनीकी शिक्षा में भी संस्कृत में परम्परागत विज्ञान के अध्ययन को भी प्रोत्साहित किया जाए।

उच्चतर तकनीकी शिक्षा में हिन्दी / भारतीय भाषा में व्यवहार की चुनौती है। राष्ट्रिय उपादेयता (Local Relevance), और वैश्विक उत्कृष्ट गुणवत्ता (Global Excellence) दोनों का सामंजस्य हो। सुझाव है कि

शिक्षक प्रमोशन में IPI के लिए और NAAC / NBA एक्रिडिटेशन के लिए रिसर्च पेपर का प्रकाशन भारतीय भाषा के समीक्षासित रिसर्च जर्नल में लगभग 20% अनिवार्य हो, वरियता दी जाए।

गरीबी उन्मूलन,गुणवत्तापूर्ण सर्व शिक्षा, सर्व स्वास्थ्य सेवा, कृषि उद्यम विकास, सस्ती संचार सेवाएँ, आपदा मदद, ऑनलाइन बेंकिंग, गुणवत्तायुक्त तकनीकी शिक्षा, जटिल समस्या समाधान में सक्रिय भागेदारी इत्यादि को सरल,और संभव बनाने के लिए ICT सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसमें कंटेंट, कम्युनिकेशन और कम्प्यूटिंग प्रमुख अवयव हैं। चुनौती है उपयोगी, सुसंगत कंटेंट बनाने की। कंटेन्ट में सुबोधता, ज्ञान–विज्ञान–साहित्य–कला का समन्वय, भारतीय संस्कृति के मानव मूल्यों का सम्यक समन्वय हो। हिन्दी के संदर्भ में इस समय गूगल सर्च में सर्चेबल मानक हिन्दी शब्दकोश नहीं है, मानक अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश नहीं है (फादर कामिल बूलके का शब्दकोश डाला जा सकता है), संस्कृत–हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोश भी नहीं है, कुछ कंटेंट पीडीएफ में है। कंटेंट बहुत कम है।

विविध प्रकार के कंटेंट के बीच सुसंगतता हो, जिससे सभी को समेकित कर ज्ञान निधि के रूप में रखा जा सके, और इससे सूचना लेना आसान हो। लेकिन वर्तमान स्थिति में भारतीय भाषाओं में आधिकारिक रूप से जांचा परखा उपयोगी और सुसंगत कंटेंट का बहुत अभाव है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तो कंटेंट नगण्य है। सामान्य ट्रांसलेशन विधा से सरल, सुबोध, लोक–अनुकूल कंटेंट तैयार करना बड़ा मुश्किल है। नया ट्रांसलेशन इंस्टीट्यूट खोलने से विशेष लाभ नहीं होगा। सुझाव है कि IITs, NITs, AIIMSs, ISERs, CSIR, केंद्रीय विश्व विद्यालयों आदि को NPTEL की भांति विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र बांट कर, तकनीकी शब्दावली, पाठ्यक्रम सामग्री और ऑनलाइन लैक्चर आदि भारतीय भाषा में बनाए जाएं।

अनुसृजन (Transcreation) विधा से सरल, सुबोध, लोकानुकूल कंटेंट क्रिएशन आसान है, लेखक को भी रचनात्मकता का परिचय देने का अवसर मिलेगा। इसको सुगम बनाने के लिए इलेक्ट्रोनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MEITy) भारतीय भाषा समेकित अनुसृजन सिस्टम (Integrated Transcreation System) सभी विज्ञान एवं तकनीकी संस्थानों में कार्यरत इच्छुक विज्ञान लेखकों को मुफ्त उपलब्ध कराने की व्यवस्था कर सकता है। इंटेग्रटेड ट्रान्सक्रिएशन सिस्टम में मशीन ट्रांसलेशन सिस्टम, प्रिंट एवं हस्त लिखित ओसीआर, ट्रांसलेशन मेमोरी, श्रेष्ठ रचना संग्रह, मानक हिन्दी–इंग्लिश–संस्कृत शब्दकोश, तकनीकी शब्दावली, श्रुतिलेखन (स्पीच टू टेक्स्ट), फॉन्ट / फाइल कन्वर्टर, आदि हों। इसमें उत्तरोतर सुधार के लिए किसी संस्था को दायित्व सौंपा जाए।

कोरोना काल में स्कूल कॉलेज बंद करने पड़े। जहां ब्रोडबैंड की सुविधा है, वहाँ पढ़ाई ऑनलाइन की जाने लगी। अनायास ही डिजिटल शिक्षण की स्वीकृति होने लगी। लेकिन बड़ी संख्या में शिक्षकों को प्रभावकारी डिजिटल पाठ्यसामग्री बनाने के लिए प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। कोरोना काल के बाद नई मिली जुली डिजिटल शिक्षण (Blended Learning) प्रणाली प्रचलन में होगी, जिसमें AI (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस), VR (वर्चअल रियलिटि), 3D प्रिंटिंग, लर्निंग एनालिटिक्स, नेक्स्ट जनरेशन LMS जैसी टेक्नोलोजी का प्रयोग बढ़ेगा। इस दिशा में योजनाबद्ध शोध, विकास और अनुप्रयोग करने होंगे। समावेशी नवाचार परिवेश (इंक्लूसिव इन्नोवेशन इको–सिस्टम) बनाने से सर्वतोन्मुखी विकास की संभावनाएं प्रबल हैं।

आज के संदर्भ में, समर्थ बनो, समर्थ बनाते चलो, उत्कृष्ट बनो, अग्रणी बनो, और विश्व नेतृत्व करो।

. . . **ओम विकास**
dr.omvikas@gmail.com